देवनागरी उर्दू

नजात का पैग़ाम

नजात का पैग़ाम

शुरू में, अल्लाह ताला ने आसमान और ज़मीन को बनाया। जो कुछ भी हम दुनिया में देखते हैं, सब कुछ ख़ुदा ने बनाया। आख़िर में, ख़ुदा ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी बीवी हव्वा (अलहिस्सलाम) को पैदा किया। ख़ुदा ने उन्हें एक ख़ूबसूरत बाग़ में रखा, और वहाँ की सारी चीज़ों पर उन्हें इख़्तियार दिया।

लेकिन ख़ुदा ने साथ में एक हुक्म भी दिया। उस ने फ़रमाया:
"लेकिन नेक ओ बद की पहचान के दरख़्त का फल न खाना क्योंकि जिस दिन तू उसे खाएगा तू ज़रूर मरेगा।"

मगर हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) और उनकी बीवी ने क्या किया? उन्होंने उसी दरख़्त का फल खाया, और अल्लाह के हुक्म को तोड़ दिया। बस, इसी एक नाफ़रमानी की वजह से, उनका रिश्ता अल्लाह से टूट गया। अगर हमारे दिल में एक भी गुनाह हो, तो हम ख़ुदा के हुज़ूर नहीं जा सकते। जैसे हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) ने गुनाह किया, वैसे ही हम सब भी गुनहगार हैं। हर इंसान के अंदर यही मसला है — गुनाह, जो हमें अल्लाह के क़रीब जाने से रोकता है।

एक मिसाल देखिए: एक पानी की बोतल है। अगर वो पानी साफ़ है, तो हम उसे पी सकते हैं। लेकिन अगर कोई उसमें सिर्फ़ एक बूँद शराब डाल दे, तो क्या यह पानी पीने के लायक रहेगा? नहीं! सिर्फ़ एक बूँद नापाक चीज़ पूरे पानी को नापाक बना देती है। उसी तरह, अगर हम पाक हों, तो सिर्फ़ एक गुनाह हमें नापाक कर देता है। और जो चीज़ नापाक हो, क्या वो जन्नत में जा सकती है? हरगिज़ नहीं। क्या वो अल्लाह की पाक हुज़ूरी में जा सकती है? नहीं जा सकती। तो फिर सवाल यह है: अगर हम गुनहगार हैं, तो ख़ुदा के पास कैसे जा सकते हैं?

इसके लिए हम हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की मिसाल देखते हैं, जिन्हें ख़लीलुल्लाह कहा जाता है। ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया कि वो अपने बेटे की क़ुरबानी पेश करें। हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने ख़ुदा का हुक्म सुना, और उस पर अमल करते हुए अपने बेटे की क़ुरबानी के लिए तैयार हो गए। लेकिन बिलकुल आख़िरी वक़्त पर, अल्लाह ने उन्हें रोक दिया, और एक जानवर दिया ताकि वो अपने बेटे की जगह क़ुरबानी दें। तो सवाल यह है कि क़ुरबानी क्यों दी जाती है? इसका मक़सद क्या है? अक्सर लोग इसका सीधा जवाब नहीं दे पाते। लेकिन अगर हम ख़ुदा के दूसरे नबियों को देखें, तो उन्होंने भी क़ुरबानी दी।

हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम), हज़रत दाऊद (अलैहिस्सलाम) — सब ने क़ुरबानी दी। तौरेत शरीफ़ में हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़रिए बताया गया कि जब इंसान गुनाह करे, तो उसे अपने गुनाहों के लिए क़ुरबानी देनी चाहिए। एक जगह अल्लाह का कलाम कहता है: **"और ख़ून बहाए बग़ैर माफ़ी नहीं होती।"**

इसी लिए सब पैग़म्बर क़ुरबानी देते थे — ताकि गुनाह माफ़ हों। लेकिन यहाँ एक मसला है। आज कल के ज़माने में गुनाह आम बात है। हम अपनी ज़िंदगी देखें, तो हम भी अल्लाह के हुक्म तोड़ते हैं। क्या साल में एक क़ुरबानी काफ़ी है? जी नहीं!

इसी लिए ख़ुदा ने और पैग़म्बर भेजे, जिन्होंने एक मसीह के आने की ख़बर दी — जो एक ही दफ़ा एक कामिल क़ुरबानी देगा। पैग़म्बरों ने बताया कि मसीह की क़ुरबानी पूरी दुनिया के गुनाहों के लिए काफ़ी होगी। फिर एक दिन, हज़रत जिब्राईल (अलैहिस्सलाम) आसमान से आए, और हज़रत मरयम (अलैहस्सलाम) को पैग़ाम दिया:
"'तू उम्मीद से हो कर एक बेटे को जनम देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देने वाला) रखना है।'"

www.taleemulkalam.org

हज़रत मरयम (अलैहिस्सलाम) ने हैरानी से पूछा:
"यह क्योंकर हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।"
हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने फ़रमाया:
"रूहुल क़ुद्दुस तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।"

और जैसे जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने बताया था, वैसे ही हुआ। क्या किसी और नबी की पैदाइश इतनी ख़ास थी? क्या फ़रिश्तों ने किसी और के पैदा होने की ख़बर दी? क्या कोई और नबी बग़ैर बाप के पैदा हुआ? हज़रत ईसा अल-मसीह अपने मोजिज़ों के लिए भी मशहूर हैं। उन्होंने बीमारों को ठीक किया, मुर्दों को ज़िंदा किया, एक मर्तबा पानी पर चले। एक दफ़ा सिर्फ़ पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया। क्या कोई और नबी ऐसे ताक़तवर मोजिज़े कर सका?

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी, उनके मोजिज़े ख़ास थे, उनकी तालीम भी ख़ास थी। हर नबी ने फ़रमाया: "यह अल्लाह का रास्ता है, इस पर चलो।"
लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया:
"राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।"
दूसरे पैग़म्बर सिर्फ़ रास्ता दिखाते थे, लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह ख़ुद रास्ता बन गए।
सबसे ख़ास बात यह है कि हज़रत ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए अपनी जान क़ुरबान की। एक कामिल क़ुरबानी। बग़ैर किसी दाग़ के। उन्होंने हमारे लिए सलीब पर अपनी जान दी। और क्या आपको मालूम है? तीन दिन बाद, वो फिर ज़िंदा हो गए! क्या आपने कभी किसी को देखा है जो तीन दिन क़ब्र में रहा हो, और फिर ज़िंदा हो गया हो?

हज़रत ईसा अल-मसीह की पैदाइश ख़ास थी। उनके मोजिज़े ख़ास थे। उनका कलाम ख़ास था। उनकी मौत ख़ास थी। और उनका ज़िंदा होना सबसे ख़ास था। अब वो कहाँ हैं? वो आसमान पर हैं, अल्लाह के हुज़ूर। बाक़ी सब नबी, उस्ताद, और रूहानी रहनुमा अब भी क़ब्र में हैं। लोग उनकी क़ब्रें आज भी देखने जाते हैं। लेकिन हज़रत ईसा अल-मसीह की क़ब्र ख़ाली है — क्योंकि वो ज़िंदा हो कर जन्नत चले गए।

एक वक़्त मुक़र्रर है — क़ियामत से पहले का वक़्त। उस वक़्त हज़रत ईसा अल-मसीह वापस आएँगे, और सब लोगों का इंसाफ़ करेंगे। हमें उस वक़्त के लिए तैयार रहना चाहिए। और तैयारी का रास्ता यह है: हम अपने गुनाहों से तौबा करें, हज़रत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाएँ, और उनके शागिर्द बन जाएँ। जो ऐसा करेगा, वो क़ियामत के दिन के लिए तैयार होगा। जो नहीं करेगा, वो दोज़ख़ की आग में जाएगा। आज हमारे सामने यह पैग़ाम है। यह फ़ैसला आज लेना है।

www.taleemulislam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....